लेखा·योग

137. आय एवं व्यय मेट्रिक्स

जून-जुलाई '07; मार्च '10 में जारी

इस अंक में

आय और व्यय के बहुत से खाते • मेट्रिक्स शैली के खाते • व्यय शीर्षकों के समूह बनाना पृष्ठ 1

वर्गीकरण • लेखांकन वर्गीकरण • कार्यक्रम वर्गीकरण पृष्ठ 2

वर्गीकरण के लिए बजट मदों का इस्तेमाल करना • एक जगत में कई जगत पृष्ठ 3

आय और व्यय के बहुत से खार्ते

हमारे देश में ज्यादातर स्वैच्छिक संगठन एक साथ कई परियोजनाओं को लागू कर रहे होते हैं। इन परियोजनाओं को पैसा देने वाली दाता संस्थाएं भी अक्सर अलग-अलग होती हैं। ये एजेंसियां चाहती हैं कि संबंधित स्वैच्छिक संगठन उनकी परियाजनाओं के लिए अलग-अलग खाते[1] रखें।

ये एजेंसियां जानना चाहती हैं कि उनके पैसे से चलायी गयी परियोजनाओं पर कितना खर्चा किया गया है। कुछ एजेंसियां व्यय को दर्शाने वाले ऑडिटेड खाते देखना चाहती हैं। ऐसे में स्वैच्छिक संगठनों को आय एवं व्यय के अलग लेखे तैयार करने पड़ते हैं। फिर इन लेखों का बाकायदा ऑडिट कराया जाता है और दाता एजेंसियों को भेजा जाता है।

यह सिलसिला कई बार बहुत जटिल हो जाता है। हो सकता है कोई एनजीओ दर्जनों परियोजनाएं लागू कर रहा हो। कभी-कभी तो एक संस्था के तहत चलने वाली परियोजनाओं की संख्या 100 से भी ऊपर चली जाती है। ऐसी सूरत में हर परियोजना के लिए अलग से ऑडिटेड लेखा तैयार करना एक भारी काम बन जाता है।

इससे संस्था के सामने बहुत स्पष्टता नहीं रहती। इससे ये तो पता चल जाता है कि किस परियोजना पर कितना खर्च हुआ है मगर संगठन के आय-व्यय की व्यापक तस्वीर सामने नहीं आती। उदाहरण के लिए, अगर आप ये देखना चाहते हैं कि किसी एनजीओ ने तनख्वाह के रूप में कुल कितना भुगतान किया है तो आपको सारी परियोजनाओं के खातों को जोड़ना पड़ेगा। यही बात दूसरे मदों में किये गये खर्चों पर लागू होती है। इस तरह के खातों के पन्नों की पोथियां संभालना भी अपने आप में उबाऊ काम बन जाता है।

मेट्रिक्स शैली के खाते

क्या इस स्थिति से बचने का कोई रास्ता है? कुछ स्वैच्छिक संगठनों और ऑडिटरों ने इसका एक बहुत आसान समाधान निकाल लिया है। वे आय और व्यय को मेट्रिक्स के रूप में दिखाते हैं। इस पद्धति में सारी परियोजनाओं के नाम ऊपर वाली पंक्ति में लिखते हैं। व्यय के शीर्षकों को बाएं सिरे पर एक कॉलम में दिखाया जाता है। वास्तविक रकमों को उनके सही खानों में लिखा जाता है। अलग-अलग कॉलमों और पंक्तियों का भी योग किया जाता है। मेट्रिक्स शैली के खाते का एक नमूना अगले पन्ने पर दिया गया है।

परेशानी ये है कि मेट्रिक्स भी कई बार बहुत बड़ा हो जाता है। एक ए4 शीट पर आंकड़ों के लगभग 5-6 कॉलम ही आ सकते हैं। यानी, अगर परियोजनाएं ज्यादा हों तो समस्या खड़ी हो जायेगी। ऐसी सूरत में मेट्रिक्स को कई पन्नों में फैलाना पड़ता है।

व्यय शीर्षकों के समूह बनाना

पंक्तियों की संख्या भी समस्या पैदा कर देती है। ज्यादातर ए4 शीट्स में 23-26 मुद्रित पंक्तियां ही आ पाती हैं। यदि मदों की संख्या इससे ज्यादा हो तो कुल योग को अगले पन्ने पर ले जाना पड़ता है। इसके बाद यही तरीका उस पन्ने पर भी अपनाना पड़ता है।

बहुत सारे मदों में व्यय का हिसाब-किताब चीजों को और धुंधला कर देता है। ब्यौरा रखना अच्छी बात है मगर जरूरत से ज्यादा ब्यौरा भी परेशानी पैदा कर देता है। इससे खातों का सही अंदाजा नहीं हो पाता। लिहाजा, हमें देखना चाहिए कि क्या खर्चों के कुछ शीर्षक आपस में मिलते-जुलते हैं और उन्हें एक साथ रखा जा सकता है या नहीं। मिसाल के तौर पर, आप तनख्वाह, मानदेय आदि के लिए एक ही शीर्षक बनाएं तो कोई हर्जा नहीं है। इसी तरह अन्य मिलते-जुलते शीर्षकों को भी एक ही समूह में रखा जा सकता है।

[1] इसका मतलब यह नहीं है कि हर परियोजना के लिए एक अलग रोकड़-बही की जरूरत पड़ेगी। आमतौर पर प्रत्येक परियोजना हेतु अलग-अलग खाता बही या ग्रुप रखने से ही काम चल जाता है। कृपया देखें लेखायोग 3: रोकड़ बही।

www.AccountAid.net

मद	फोर्डः महिलाओं का सबलीकरण	ऑक्सफेमः एडवोकेसी	केयरः माइक्रो क्रेडिट	क्राईः बाल अधिकार	डायकोनिया	सीडा	कुल
आय							
पिछले साल की बकाया राशि	5,20,000	6,10,000	8,05,000	1,75,000	2,00,000	8,00,000	31,10,000
इस साल मिली राशि	15,00,000	5,00,000	10,00,000	8,00,000	4,00,000	20,00,000	62,00,000
घटाईः रिवॉल्विंग फंड/ स्थायी परिसंपदा निधि में डाली गयी राशि			(10,00,000)				(10,00,000)
कुल आय	**20,20,000**	**11,10,000**	**8,05,000**	**9,75,000**	**6,00,000**	**28,00,000**	**83,10,000**
व्यय							
तनख्वाह	5,00,000	3,00,000	4,00,000	2,00,000	1,00,000	4,50,000	19,50,000
भाड़ा	25,000	15,000	22,000	20,000	5,000	25,000	1,12,000
बिजली	15,000	20,000	15,000	10,000	3,000	5,000	68,000
एनएफई केंद्र				3,00,000		15,50,000	18,50,000
शिक्षा सामग्री				2,00,000			2,00,000
प्रशिक्षण सामग्री	7,80,000						7,80,000
वकीलों की फीस		6,00,000					6,00,000
बच्चों की वर्दी				1,50,000	1,00,000		2,50,000
स्टेशनरी	10,000	10,000	2,000	6,000	2,000		30,000
छपायी एवं दस्तावेजीकरण	30,000	15,000	15,000	15,000	15,000	20,000	1,10,000
कुल व्यय	**13,60,000**	**9,60,000**	**4,54,000**	**9,01,000**	**2,25,000**	**20,50,000**	**59,50,000**
बचा हुआ पैसा/ (सीमा से अधिक व्यय)	6,60,000	1,50,000	3,51,000	74,000	3,75,000	7,50,000	23,60,000

नीचे ऐसे मदों का उदाहरण दिया गया है जिन्हें साथ-साथ रखा जा सकता हैः

वेतन	ओवरहेड खर्चे	किराया	सामग्री
वेतन	भाड़ा	स्थानीय अवागमन	शिक्षा सामग्री
मानदेय	बिजली	कार्यक्रम संबंधी यात्रा	प्रशिक्षण सामग्री
मजदूरी	टेलीफोन	यात्रा भत्ता	प्रशिक्षण के लिए कच्चा माल
कार्मिक लाभ	पानी	ईंधन एवं वाहनों का भाड़ा	संदर्भ सामग्री
पारिश्रमिक	कार्यालयी व्यय		आपूर्ति

आप चाहें तो अन्य चीजों को भी मिलते-जुलते शीर्षकों के नीचे रख सकते हैं।

वर्गीकरण

लेखांकन वर्गीकरण

एक सवाल ये है कि आय और व्यय मेट्रिक्स को लेखा शीर्षकों के जरिये प्रस्तुत किया जाना चाहिए या कार्यक्रम संबंधी शीर्षकों के जरिए। लेखांकन मद लेखाकारों के नजरिये और आम समाज की सुविधा के हिसाब से तय किये जाते हैं इसलिए ज्यादातर लोग उन्हें आसानी से समझ लेते हैं। इससे लोगों को ये समझने में मदद मिलती है कि कोई संस्था अपने पैसे को किस तरह खर्च करती है। उदाहरण के लिए, इनसे आपको ये पता चल सकता है कि कोई संस्था तनख्वाह, किराये, यात्रा, स्टेशनरी आदि पर कितना खर्च करती है। परंतु इस वर्गीकरण से खर्चे का उद्देश्य पता नहीं चलता। उपरोक्त उदाहरण में लेखा वर्गीकरण (तनख्वाह, यात्रा, भाड़ा आदि) का प्रयोग किया गया है।

कार्यक्रम वर्गीकरण

यह वर्गीकरण सामाजिक कार्यकर्त्ता के नजरिये से निर्धारित होता है। इस वर्गीकरण से आपको व्यय का उद्देश्य पता चल जाता है। मिसाल के तौर पर, आपको ये पता चल सकता है कि पर्यावरण से जुड़े मुद्दों पर कितना खर्चा हुआ है; सबलीकरण, बच्चों की शिक्षा आदि पर कितना खर्चा हुआ है। इससे संस्था की प्राथमिकताएं समझने में तो मदद मिल सकती है परंतु आप ये नहीं जान सकते कि पैसा खर्च किस तरह किया गया था। उदाहरण के लिए, तनख्वाह पर, ओवरहेड आदि पर कितना पैसा खर्च हुआ है। एक परेशानी ये है कि कुछ ऑडिटर इस तरह के वर्गीकरण को प्रमाणित करने से कतराते हैं। इसकी वजह ये है कि ज्यादातर ऑडिटर खर्चों के उद्देश्य की जांच नहीं करते। उदाहरण के तौर पर कुछ वर्गीकरण नीचे दिये गये हैं।

मद	फोर्डः महिलाओं का सबलीकरण	ऑक्सफेमः एडवोकेसी	केयरः माइक्रो क्रेडिट	क्राईः बाल अधिकार	डायकोनिया	सीडा	कुल
जागरूकता		20,000			50,000		70,000
वाटर शेड						1,00,000	1,00,000
माइक्रो क्रेडिट			50,000				50,000
शिक्षा कार्यक्रम				1,50,000			1,50,000
ऐडवोकेसी		40,000					40,000
स्वास्थ्य कार्यक्रम	75,000						75,000
कुल व्यय	**75,000**	**60,000**	**50,000**	**1,50,000**	**50,000**	**1,00,000**	**4,85,000**

वर्गीकरण के लिए बजट मदों का इस्तेमाल करना

कुछ लोग वर्गीकरण के लिए बजट में दिये गये शीर्षकों का ही इस्तेमाल करते हैं। यह आसान और सरल तरीका है जिसे दाता एजेंसियां भी आसानी से समझ लेती हैं। परन्तु औरों के लिए ये बहुत फायदेमंद नहीं होता। वैसे भी इस पद्धति में बहुत सारे अलग-अलग बजटों का इस्तेमाल करना पड़ सकता है क्योंकि अलग-अलग एजेंसियों के बजट मदों को एक जगह इकट्ठा करने में मुश्किल आ सकती है। इसका एक उदाहरण नीचे दिया गया है।

मद	फोर्डः महिलाओं का सबलीकरण	ऑक्सफेमः एडवोकेसी	केयरः माइक्रो क्रेडिट	क्राईः बाल अधिकार	डायकोनिया	सीडा	कुल
प्रकाशन	1,20,000						1,20,000
यात्रा	10,000	5,000	6,000	5,000	2,000	6,000	34,000
प्रशासन	10,000	10,000	5,000	6,000	2,000	4,000	37,000
कार्यशाला	25,000			40,000			65,000
रैली		15,000				20,000	35,000
एनएफई केंद्र				1,00,000			1,00,000
वेतन	75,000	50,000	55,000	25,000	10,000	15,000	2,30,000
कुल व्यय	**2,40,000**	**80,000**	**66,000**	**1,76,000**	**14,000**	**45,000**	**6,21,000**

एक जगत में कई जगत

1950 के दशक में अमेरिकी वैज्ञानिक ह्यू एवरेट ने कहा था कि बहुत सारी वैकल्पिक दुनियाएं एक-दूसरे के साथ अस्तित्व में हैं। यह पहला मौका था जब इस अवधारणा को एक वैज्ञानिक संदर्भ[2] में जगह मिली थी। उस वक्त के प्रमुख वैज्ञानिकों ने इस दलील को खारिज कर दिया था। फलस्वरूप ह्यू एवरेट गुमनामी के अंधेरे में खो गये और उनका बड़ा दुखद अंत हुआ। परंतु उनकी सोच का दौर आ चुका था। 'बहुत सारे जगत' (मैनी वर्ल्ड्स) पद वैज्ञानिक कथा साहित्य की दुनिया में बहुत प्रचलित हुआ और धीरे-धीरे क्वांटम फिजिक्स में स्थापित हो गया।

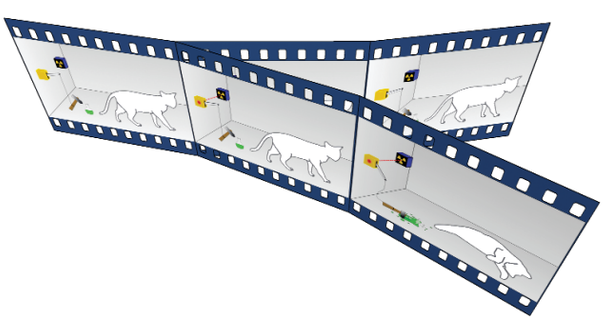

क्या अब स्वैच्छिक संगठनों के लेखाकारों को भी बहुत सारी बैलेंस शीट्स को एक ही बैलेंस शीट में इकट्ठा कर लेना चाहिए? यदि हम एक ही एनजीओ द्वारा चलायी जा रही बहुत सारी परियोजनाओं की मुकम्मल तस्वीर समझना चाहते हैं तो शायद हां। और मेट्रिक्स रिपोर्टिंग[3] में इस काम को करने का बहुत ही सरल और किफायती रास्ता दिखायी दे रहा है।

[2] बहुजगत की अवधारणा दुनिया भर के धर्मशास्त्रीय ग्रंथों में प्राचीन काल से ही मौजूद रही है।

[3] पृष्ठ 93-96, 105-107, 'एकाउंटिंग गाइड फॉर नॉन-प्रॉफिट ऐण्ड नॉन-प्रॉफिट सेक्टर एकाउंटिंग' (2006) एपीपीसी, www.asiaphilanthropy.com

लेखा·योग

137. आय एवं व्यय मेट्रिक्स जून-जुलाई '07; मार्च '10 में जारी

Accountaid™
Accounting for Aid. Aid in Accounting

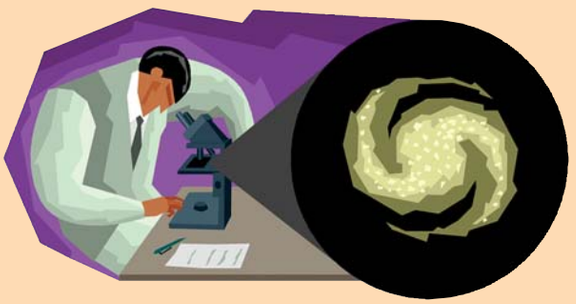

मेट्रिक्सः मां के पेट में

मेट्रिक्स शब्द का मतलब एक ऐसी तालिका से होता है जिसमें अलग-अलग संभव मूल्य दर्शाये जाते हैं। इस तालिका का इस्तेमाल काफी नया है। यह 1914 से शुरू हुआ था।

यह अंग्रेजी का शब्द है। इसके मूल फ्रेंच शब्द *मेट्रिसे* का मतलब गर्भवती जीव से होता था (1373)। यह शब्द भी लेटिन भाषा के *मातेर* शब्द से निकला है जो कि संस्कृत के शब्द *मात्री* शब्द से मिलता-जुलता है। संभवतः इसकी साझा भारोपीय जड़ें रही हैं।

1555 में मेट्रिक्स शब्द पहली बार एक ऐसे स्थान या माध्यम के लिए इस्तेमाल किया गया जहां कोई चीज विकसित होती है, ठीक गर्भ की तरह। ठीक 444 साल बाद इसी नाम की एक विज्ञान फंतासी पर बनी फिल्म ने सारी दुनिया की कल्पना को अपनी गिरफ्त में ले लिया था। जबर्दस्त मारधाड़ से लैस ये फिल्म इस बात को दर्शाने की कोशिश करती है कि हम जो दुनिया देखते हैं वह एक कंप्यूटर गेम की तरह कंप्यूटर से बनी छवि भी हो सकती है!

चाहे ये कितना भी अजीब लगे मगर दुनिया की यह छवि वैदिक युग के प्राचीन ऋषियों, अफलातून जैसे दार्शनिकों और आधुनिक क्वांटम वैज्ञानिकों तक, लगातार सबका ध्यान खींचती रही है! 1956 में ह्यू एवरेट ने असंख्य जगत का सिद्धांत दिया था जिसने अंततः क्वांटम मैकेनिक्स को क्रांतिकारी ढंग से बदल डाला था।

स्रोतः योग वशिष्ठ; www.etymology.com, www.matrix.com; इन्फॉर्मेशन इन दि होलोग्राफिक यूनिवर्स, जैकब डी. बर्नस्टीन (साइंटिफिक अमेरिकन, पृष्ठ 48-55, अगस्त 2003); लाइफ आफ्टर डेथ, दीपक चोपड़ा (2006), दि मैनी वर्ल्ड्स ऑफ ह्यू एवरेट, पीटर बायर्न (साइंटिफिक अमेरिकन इंडिया, पृष्ठ 68-75, दिसंबर 2007)।

लेखा योग क्या है:

'लेखा-योग' के प्रत्येक अंक में एनजीओ नियमन या लेखांकन से संबंधित किसी खास मुद्दे को उठाया जाता है और इसे लगभग 1500 गैर-सरकारी संगठनों, एजेंसियों और ऑडिट कंपनियों को भेजा जाता है। अगर कार्यशालाओं या एनजीओ न्यूजलैटर्स में गैर-व्यावसायिक कामों के लिए 'लेखा-योग' का पुनर्प्रकाशन या वितरण किया जाता है तो अकाउंटएड को कोई एतराज नहीं है बशर्ते आप इस बात का उल्लेख कर दें कि आपने यह सामग्री 'लेखा-योग' से ली है।

अंगेजी में लेखा-योगः

लेखा-योग अंग्रेजी में 'अकाउंटेबल' के नाम से उपलब्ध है।

कानून की व्याख्याः

यहां कानून की जो व्याख्या दी गई है वह काफी मोटे स्तर पर है। कोई भी अहम फैसला लेने से पहले अपने सलाहकारों से बात ज़रूर करें।

इंटरनेट पर लेखा-योगः

'लेखा-योग' के कुछ चुने हुए अंक हमारी वेबसाइट - **www.AccountAid.net.** पर उपलब्ध हैं।

ई-मेल द्वारा लेखा-योगः

लेखायोग के नए अंक अब ई-मेल द्वारा मुफ्त में प्राप्त करने के लिए हमारी वेबसाइट - **www.AccountAid.net** पर जाकर **'Lekha Yog by E-mail'** को क्लिक कर अपना विवरण भरें।

अकाउंटएड कैप्सूलः

इसमें एनजीओ लेखांकन और इससे जुड़े मुद्दों से संबंधित जानकारियां दी जाती हैं। इसे प्राप्त करने के लिए हमारी वेबसाइट - **www.AccountAid.net** पर जाकर **'AccountAid Capsule'** को क्लिक कर अपना विवरण भरें।

सवाल और स्पष्टीकरण?

अकाउंटएड एनजीओ लेखांकन या वित्तीय नियमन से जुड़े सवालों पर गैर-सरकारी संगठनों और उनके ऑडिटर्स को सलाह देता है। आप भी अपने सवाल ई-मेल या खत के जरिए हमसे पूछ सकते हैं। आप चाहें तो फोन पर भी हमसे बात कर सकते हैं।

टिप्पणियांः

आप अपनी टिप्पणियां और सुझाव अकाउंटएड इंडिया, 55 बी, पॉकेट सी, सिद्धार्थ एक्सटेंशन, नई दिल्ली - 110014 पर भेज सकते हैं। हमारा फोन नंबर है 011-26343128; फोन/फैक्स : 011-26343852;
ई-मेलः **info@accountaid.net**

© अकाउंटएड इंडिया विक्रम संवत 2067 चैत्र, ईस्वी सन् मार्च 2010.

श्रीमती चारू मलहोत्रा द्वारा अकाउंटएड इंडिया, नई दिल्ली (फोन 26343128) के लिए मुद्रित एवं प्रकाशित तथा प्रिंटवर्क्स, एफ-25,ओखला इन्डस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित।

लेखः श्री संजय अग्रवाल; अनुवादः श्री योगेन्द्र दत्त

सम्पादनः कु. सुदिप्ता साहा

डिज़ाइनः श्रीमती मोऊशुमी डे

केवल निजी प्रसार के लिए।

info@accountaid.net